Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

वनपाल - वनरक्षक

Rajasthan Subordinate & Ministerial Services Selection Board

भाग – 2

राजस्थान का सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान वनपाल – वनरक्षक

CONTENTS

राजस्थान का भूगोल		
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	81
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	84
14.	राजस्थान में उद्योग	88
15.	राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	92
राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति		
1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	95
	• परिचय	95
	• प्राचीन सभ्याताएँ	98
	• महाजनपद काल	102
	• मौर्यकाल	103
	• मौर्योत्तर काल	103

	• गुप्तकाल	103
	• गुप्तोत्तर काल	104
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास	105
	• प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ	
	• राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	
3.	आधुनिक राजस्थान का इतिहास	147
	• 1857 की क्रांति	147
	• प्रमुख किसान आन्दोलन	149
	• प्रमुख जनजातीय आन्दोलन	153
	• प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन	154
	• राजस्थान का एकीकरण	158
4.	राजस्थान कला एवं संस्कृति	163
	• राजस्थान के त्यौहार	163
	• राजस्थान के लोक देवता	169
	• राजस्थान की लोक देवियाँ	174
	• राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय	178
	• राजस्थान के लोकगीत	184
	• राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ	185
	• राजस्थान के संगीत	186
	• राजस्थान के लोक नृत्य	187
	• राजस्थान के लोकनाट्य	191
	• राजस्थान की जनजातियाँ	194
	• राजस्थान की चित्रकला	197
	• राजस्थान की हस्तकलाएँ	203
	• राजस्थान का साहित्य	206
	• राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	212
	• राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र	214
5.	राजस्थान की स्थापत्य कला	219
	• किले एवं स्मारक	219
	• राजस्थान के धार्मिक स्थल	228

	• राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज	233
	• राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	235
	• वेश–भूषा व आभूषण	239

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग
(Physical Regions & Divisions

भूमिका: भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पक्षों को संमाहित किया जाता है । किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है– 'भौतिक प्रदेश'

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है ।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपति किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण निर्वनीकरण, मानदीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे है जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशो के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है ।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को उच्चावच एवं धरातल के आधार पर मोटे तौर पर चार भागों में एवं विभिन्न उप विभागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

1. पश्चिम मरूस्थलीय प्रदेश
   - शुष्क रेतीला प्रदेश (मरूस्थल)
   - लूणी-जवाई मैदान (लूणी बेसिन)
   - शेखावटी प्रदेश (बांगर प्रदेश)
   - घग्घर का मैदान

2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश - उपविभाजन
   - उत्तरी अरावली
   - मध्य अरावली
   - दक्षिणी अरावली

3. पूर्वी मैदान प्रदेश - उपविभाजन
   - बनास बेसिन
   - चम्बल बेसिन
   - मध्य माही बेसिन (छप्पन का मैदान)

4. दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश (हाडौती प्रदेश) उपविभाजन
   - अर्द्धचंद्राकार पर्वत श्रेणियां
   - नदी भ्रमित मैदान
   - शाहबाद का उच्च स्थल
   - झालावाड का पठार
   - डग-मंगधार का उच्च क्षेत्र

भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी

क्षेत्र	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जिले	मिट्टी	जलवायु
मरूस्थल	61.11 प्रतिशत	40 प्रतिशत	12	बलुई	शुष्क व अर्द्धशुष्क
अरावली	9 प्रतिशत	10 प्रतिशत	13	पर्वतीय या वनीय	उपार्द्र
पूर्वी मैदान	23 प्रतिशत	39 प्रतिशत	10	जलोढ	आर्द्र
हाडौती, दक्षिण पूर्वी	6.89 प्रतिशत	11 प्रतिशत	7	काली या रेगूर	आर्द्र या अति आर्द्र

राजस्थान में भूगर्भीक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट है । यहां प्राचीनतम प्री - कैम्ब्रीयन युग के अवशेष अरावली के रूप में मौजूद है ।

यहाँ आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, प्राद्यजीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के साक्ष्य मौजूद है । बाप बोल्डर बैड (बाप गांव जोधपुर) - पुराजीवी महाकल्प के परमियन कार्बोनीफेरस युग के अवशेष मिले है जिन्हें हिमवाहित माना जाता है । कुछ गोलाश्म खंडो पर स्पष्ट लकीरें कें चिन्ह सुरक्षित है जो संभवतः हिमवाहित होने के कारण घर्षन उत्पन्न हुए है ।

भादुरा बालुकाश्म (जोधपुर) - यहां जीवाश्म युक्त बालुकाश्म मिले है जो बाप और भादुरा आस पास मिले है । इन बालुकाश्म का निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है ।

(I) उत्तरी-पश्चिमी मरूस्थलीय-प्रदेश

(i) निर्माणकाल-टर्शयरीकाल (क्वार्टनरी काल में प्लीस्टोसीन) इसे भारत का विशाल मरूस्थल अथवा थार के मरूस्थल के नाम से जाना जाता है ।

इसे मरू प्रदेश का विस्तार लगभग 175000 वर्ग किमी. है । जो सम्पूर्ण राजस्थान का 61.11% प्रतिशत है । इस मरूस्थल का राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलों मे है । लेकिन वास्तविकता में सिरोही सहित 13 जिलों में है ।

श्री गंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, बीकानेर, झुझनु, सीकर, जोधपुर, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, पाली, नागौर ।

राजस्थान में कुल

(ii) विस्तार:- मरूस्थलीय ब्लॉक-85
   - (a) लम्बाई - 640किमी.
   - (b) चौडाई - 300किमी.
   - (c) औसत ऊँचाई - 200-300 मीटर(औसत 250 मी.)

(iii) तापक्रम - ग्रीष्मकाल - 49°C
शीतकाल - -3°C
औसत - 22°C

(iv) वर्षा - 20 से 50 सेंटिमीटर तक होती है ।

(v) वनस्पति - जीरोफाइट या शुष्क वनस्पति पाई जाती है ।

(vii) मिट्टी - रेतीली बलुई मिट्टी

(iii) मरूस्थल का ढाल :-

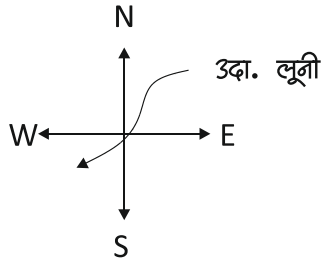

(iv) मरूस्थल का अध्ययन :-

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागों में बाँटा जाता है ।

- (a) शुष्क मरूस्थल (0-25cm)
- (b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश (25-50cm)

नोटः-''25 cm. समवर्षा रेखा'' मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बाँटती है।

(a) शुष्क मरूस्थल

25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है ।

पश्चिम मरुस्थल का सबसे बडा जिला - जैसलमेर

पश्चिम मरुस्थल का सबसे छोटा जिला - झुन्झुनूँ

शुष्क मरूस्थल को पुनः दो भागो में बाँटा जाता हैः-

- बालूका स्तूप मुक्त (41.5%)
- बालूका स्तूप युक्त (58.5%)

कारण :- पथरीला मरूस्थल जिसे ''हमादा'' कहा जाता है ।

विस्तार - जैसलमेर (max.), बाडमेर, जोधपुर

पवन → मिट्टी → निक्षेपण → बालूका स्तूप

नोटः-बालूका स्तूप

जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालूका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है ।

बालूका स्तूप को टीले/टीबे भी कहते है । जैसलमेर में इन्हें धरियन नाम से जाना जाता है ।

बालूका स्तूप के प्रकार

		प्रकार	सर्वाधिक
(i)	पवन ←	अर्द्धचन्द्राकार	बरखाना	शेखावटी (चूरू)
(ii)	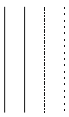 पवन ← ← पवन	समकोण	अनुप्रस्थ	बाडमेर, जोधपुर
(iii)	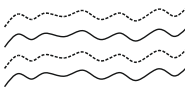 ← ←	समान्तर	अनुदैर्ध्य/रेखीय	जैसलमेर
(iv)			तारानुमा	1. जैसलमेर 2. सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

(V) पेराबोलिक

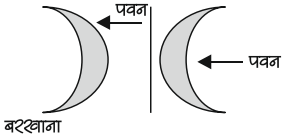

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप "पेराबोलिक" कहलाते हैं ।

नोटः- यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते हैं ।

(vi) सीफ (Seif)

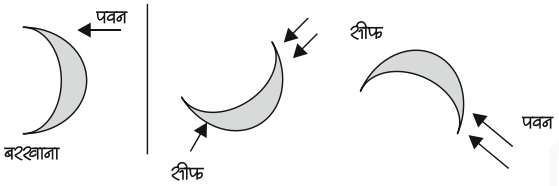

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है ।

(vii) शब्र काफीराज (Scrub Coppies)

मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

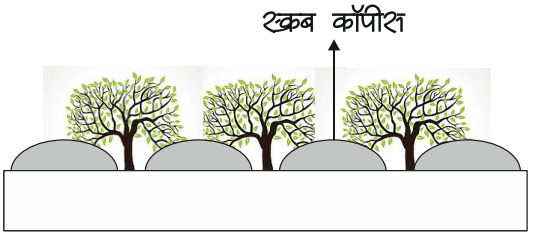

यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोटः- 1 बरखान – अनुप्रस्थ
2 सीफ – अनुदैर्ध्य/रेखीय
3 सर्वाधिक बालूका स्तूप – जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप – जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश

25–50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है ।
इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बाँटा जाता हैः-

1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

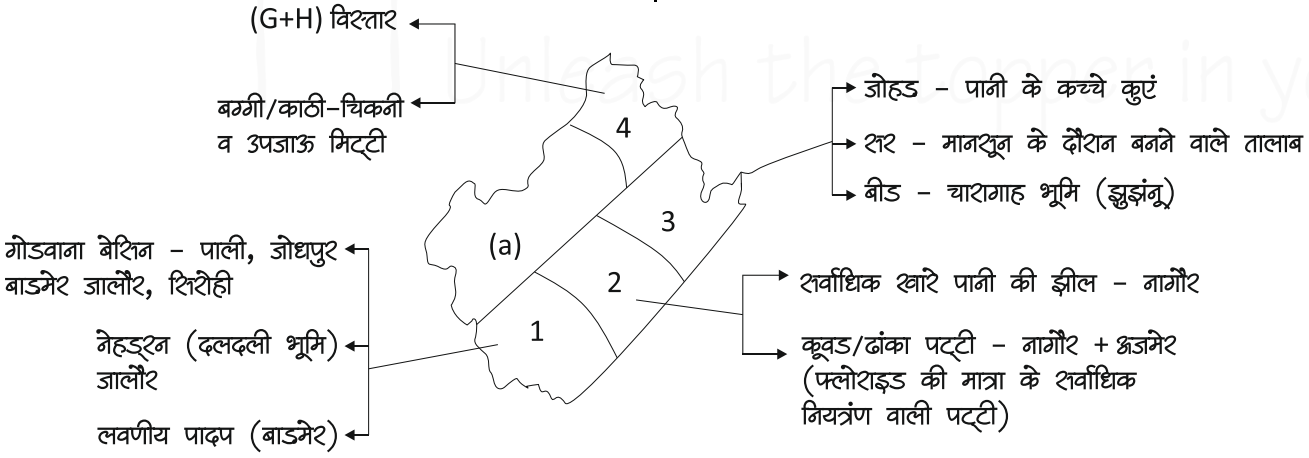

1. अर्द्धशुष्क मरुस्थल

(i) लूणी बेसिन /गोडवार प्रदेश

अजमेर → नागौर → पाली → जोधपुर → बाडमेर → जालौर

- लूणी बेसिन का पूर्वी क्षेत्र – काला भेरा क्षेत्र

(ii) नागौरी उच्च भूमि – यहाँ टेथिस सागर के अवशेष नहीं है क्योंकि यहाँ की चट्टानों में माइकोसिस्ट के अवशेष है ।

- परबतसर कुचामन नावां के अतिरिक्त कहीं भी पहाडियाँ नहीं है ।
- हरियल पक्षी नागौरी उच्च भूमि में ही पाया जाता है ।
- अजमेर व नागौर के मध्य का भाग – कूबड/बांका पट्टी

(iii) **शेखावटी अन्तः प्रवाह** – सीकर, चूरू, झुन्झुनूँ, जयपुर

- शेखावटी में पानी के कच्चे कुएँ – जोहड

- जोहड के गहरे भाग को पोंथी कहते है ।
- जयपुर में कुओं को बेर/बेरा कहते है ।

(iv) घग्घर का मैदान – गंगानगर व हनुमानगढ का क्षेत्र है । घग्घर नदी के क्षेत्र को नाली/पाह/बग्गी कहते है ।

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती है जो है:-

पद्धतियाँ

1. प्लाया/खडीन/ढाढ झील :-

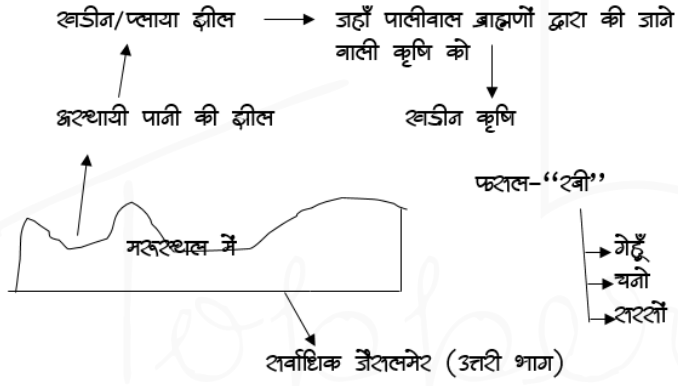

2. आगोर :- घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है ।

3. नाडी :- प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है ।
नाडी विशेष रूप से जोधपुर में है ।

4. बावडी :- सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावडी कहलाता है ।
बावडी शंक जाति द्वारा प्रारंभ की गई बावडियों का शहर - बूंदी

5. बेरा या बेरी :- खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है ।

6. टोबा :- कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है ।

7. जोहड या खूँ :- शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है ।

पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान सामान्यत शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र है फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है । इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित है-

1. मरूद्भिद् (XEROPHYTE)

अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियाँ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती है । इनकी जडे अधिक गहरी तथा पतियाँ काँटो के रूप में होती है । जैसे बबूल, केर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि ।

2. चाँधन नलकूप

जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घडा' भी कहते है । इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है ।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान (OASIS)

मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है, जैसे चाँधन नलकूप, श्री कोलायत झील ।

4. तल्ली/मरहो/बालरान

मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालरान कहलाती है ।

5. रन/टाट

मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है । रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोट :-

प्रमुख रन	स्थान
तालछापर	चूरू
परिहारी	चूरू
फलौदी	जोधपुर
बाप	जोधपुर
थोब	बाड़मेर
भाकरी	जैसलमेर
पोकरण	जैसलमेर (परमाणु परीक्षण 1974 (18 मई) 1998 (11,13 मई)

6. प्लाया/खारी झीलें/सेलिना या सेलाइना

बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती है ।

7. लाठी सीरीज

जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है। करडी, धामण

8. मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्च

- मरूस्थल का आगे बढना/विस्तार
- दिशाः- SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :-हरियाणा
- सर्वाधिक योगदानः- बरखान
  क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है ।

नोट :-

- Erg (अर्ग) → रेतीला
- रेग → दोनो (रेतीला + पथरीला)
- हमादा → पथरीला

निष्कर्षण

मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड-पोधे जीव जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरूस्थल है ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

मावठ/महावठ

भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है ।

यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है । इस कारण इसे ''गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops) भी कहा जाता है ।

रामगांव

जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 10 सेमी. बारिश होती है ।

आंकलगाँव

राजस्थान का एकमात्र ''वूड फॉसिल्स पार्क''(लकडी के जीवाश्म का) है। यहाँ 8 करोड वर्ष पुराने जूरासिक काल के लकडी के अवशेष मिले है । यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग है ।

मरूस्थलीकरण

मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है । इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है ।

लघु मरूस्थल/थली

थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है । यह अपेक्षाकृत नीचा है । इसे बीकानेर के आस-पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते है ।

धरियन

जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है ।

सर/सरोवर

विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है । जैसे-अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि ।

पीवणा

- पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है ।
- पीवणा सर्प डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि के सोते समय व्यक्ति को श्वास के द्वारा जहर देकर मार देता है ।

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

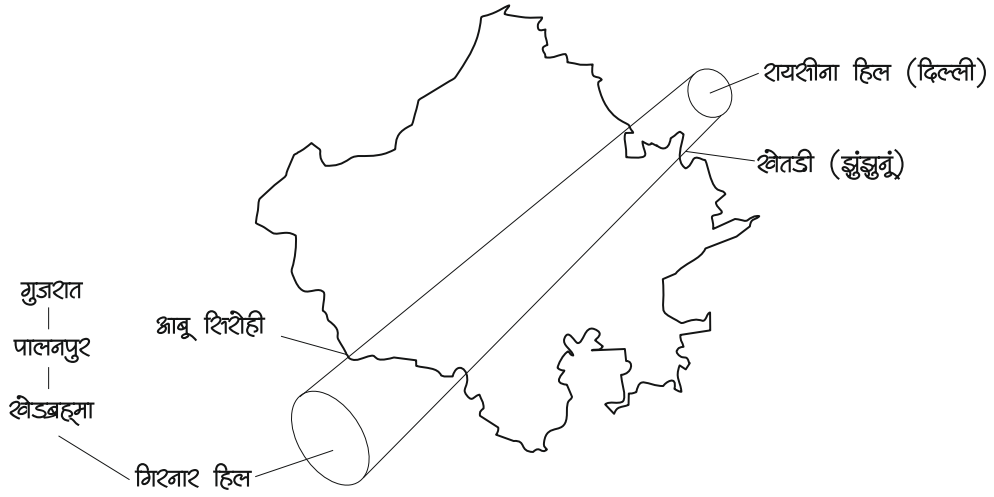

1. विस्तार – इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर, पालनपुर (गुजरात) से रायसिन्हा की पहाडी पालम (दिल्ली) तक 692 किमी है। राजस्थान में इसकी लम्बाई 550 किमी है । इसका विस्तार मुख्यतः 9 जिलों डूंगरपुर, बांसवाडा, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौडगढ, अजमेर, पाली, भीलवाडा में है ।
2. अरावली पर्वतमाला का उद्गम अरब सागर के मिनीकॉय द्वपी से होता है ।
3. अरब सागर को अरावली का पिता माना जाता है ।
   - राजस्थान में अरावली खेडब्रह्म (सिरोही) से खेतडी (झुन्झुनू) तक
4. क्षेत्रफल – यह भू–भाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत धारण किये हुए है ।
5. इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है ।
6. जलवायु एवं वायुदाब– यहाँ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब एवं औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है ।
7. वर्षण– यहाँ 50–80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है । 50 सेमी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरूस्थल क्षेत्र से अलग करती है ।
8. खनिज एंव चट्टानें:– यहाँ पर तांबा, लोहा, चाँदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नील, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती है ।
9. प्रकृति– गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रीकेम्ब्रियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलीत पर्वत माला के रूप में है ।
10. मृदा– यहाँ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियाँ पायी जाती है ।
11. वनस्पति– यहाँ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जडे कम गहरी होती है, पायी जाती है तथा यहाँ मुख्यतः मक्का की खेती होती है ।
12. उच्चावच– इस क्षेत्र में पहाड–पहाडी, डूँगर–डूँगरी, दर्रे या नाल पाये जाते है ।
13. सबसे प्राचीन वलित पर्वतमाला है ।
14. अबुल फजल ने अरावली को 'ईंट की गर्दन' कहा।
15. टॉड ने राजपूताना की सुरक्षा दीवार कहा ।
16. टॉड ने गुरुशिखर को 'संतों का शिखर' कहा है ।

अरावली की शब्दावली

- बीजासन – माण्डलगढ व भीलवाडा के मध्य
- मैना पहाडी – भरतपुर
- देवगिरी पहाडी – दौसा
- ऐसारणा पर्वत – पाली

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

राजस्थान का इतिहास एक परिचय

- 1949 ई. से पूर्व राजस्थान राज्य अस्तित्व मे नही था ।
- 1800 ई. में सर्वप्रथम जॉर्ज थॉमस ने इस भू भाग के लिए "राजपुताना" शब्द का प्रयोग किया था;
- 1829 ई. में "एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान" के लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने इस पुस्तक में इस प्रदेश का नाम "रायथान" अथवा "राजस्थान" रखा ।
- 30 मार्च 1949 ई. को स्वतन्त्रता पश्चात प्रदेश की विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ और इस प्रदेश का नाम राजस्थान सर्वसम्मिति से स्वीकार किया गया ।

प्राचीन काल से ही राजस्थान विभिन्न क्षेत्रों के भिन्न भिन्न नाम मिलते है, जिन्हें हम दो प्रकार से बांट सकते है ।

(1) प्राचीन काल एवं अभिलेखो के अनुसार नाम

प्राचीन नाम	–	वर्तमान नाम
मरू, धन्व	–	जोधपुर संभाग (मरूस्थल)
जांगल	–	बीकानेर – जोधपुर
मत्स्य	–	जयपुर,अलवर,भरतपुर
शुरसेन	–	धौलपुर–करौली
अक्षात्रिपुर	–	नागौर

नोट

मरू, धन्व, जांगल, मत्स्य, शुरसेन का उल्लेख ऋग्वेद मे भी मिलता है ।

- शूरसेन, मत्स्य का उल्लेख महाभारत मे भी मिलता है ।

(2) भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नाम

कांठल	–	प्रतापगढ का क्षेत्र माही नदी के आस–पास
छप्पन का मैदान	–	बांसवाडा–प्रतापगढ के मध्य का भू भाग
ऊपरमाल	–	भैसरोढगढ से लेकर बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र
गिरवा	–	उदयपुर के आस पास का पहाडी क्षेत्र
मॉड	–	जैसलमेर
बांगड	–	डूंगरपुर बासंवाडा
हाडौती	–	कोटा–बूँदी
शेखावाटी	–	सीकर झुन्झुनू, चुरू
मेवल	–	डूँगरपुर व बाँसवाडा के मध्य क्षेत्र को

प्राचीन राजस्थान का इतिहास

इतिहास का विभाजन

सम्पूर्ण इतिहास को तीन भागों (कालों) में विभक्त किया गया है ।

काल खण्ड		
प्रागैतिहासिक काल	आद्य ऐतिहासिक काल	ऐतिहासिक काल
इतिहास जानने हेतु लिखित साक्ष्य उपलब्ध नही अर्थात मानव लेखन शैली से परिचित नही।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित परन्तु उस लिपि को अभी तक पढा नही जा सकता है ।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित था । इस काल के स्पष्ट एवं सुपठित लिखित साक्ष्य उपलब्ध है ।
इतिहास जानने का स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य एवं उपकरण अथवा सामग्री है।	इन अर्थो मे भारतीय इतिहास को इस प्रकार से विभक्त कर सकते है ।	
मानव आदिम था, मायावरी जीवन जीता था	1. प्राक युग – सृष्टि के आरम्भ से हडप्पा सभ्यता के पूर्व तक था ।	
आखेट पर जीवन निर्वाह करता था	2. आद्य युग– हडप्पा सभ्यता – 600 ईसा पूर्व	
आग जलाना सीख चुका था ।	3. ऐतिहासिक–600 ईसा पूर्व – वर्तमान तक	

शिलालेख

- शिलालेख के अध्ययन को 'एपीग्राफी' कहते है ।
- भारतीय लिपियों पर पहला वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. गौरीशंकर हीरानन्द ओझा ने किया ।

घोसुण्डी शिलालेख

- यह शिलालेख नगरी (चित्तौड) के समीप घोसुण्डी ग्राम से द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व प्राप्त हुआ ।
- इस शिलालेख में भागवत धर्म का प्रसार, अश्वमेघ यज्ञ का प्रचलन आदि से है । अतः यह शिलालेख भागवत धर्म की जानकारी देने वाला राजस्थान का प्राचीन प्रमाण है ।

गंगधार शिलालेख

- यह शिलालेख झालावाडा के गंगाधर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसकी भाषा संस्कृत है ।

सांमोली शिलालेख

उदयपुर जिल के सांमोली ग्राम से प्राप्त शिलालेख गुहिल वंश के शासक शिलादित्य के समय का है ।

अपराजिता शिलालेख

वि.सं. 718 का यह शिलालेख नागदा के समीपस्थ कुण्डेश्वर मंदिर की दीवार पर लगा हुआ है ।
इस लेख की भाषा संस्कृत है ।

चित्तौड का मानमोरी शिलालेख

713 ई. का यह शिलालेख चित्तौड के पास मानसरोवर झील के तट पर कर्नल जेम्स टॉड को प्राप्त हुआ ।

ओसियाँ का शिलालेख

956 ई. में पदाजा द्वारा उत्कीर्ण किया हुआ संस्कृत भाषा में पद्य रूप में है ।

किराडू का शिलालेख

यह शिलालेख एक प्रकार से राजा के आदेश/आज्ञा की जानकारी देता है । यह शिलालेख किराडू (बाडमेर) के निकट शिवमन्दिर में उत्कीर्ण है ।

प्रागैतिहासिक राजस्थान अथवा प्राक युग में राजस्थान

- मानव सभ्यता के उदभव के काल को पाषाण काल कहते है जो इस प्रकार विभक्त है ।
  (1) पूर्व पाषाण काल
  (2) मध्य पाषाण काल
  (3) उत्तर/नव पाषाण काल
- चूंकि राजस्थान प्राचीनतम भू भागों में से एक होने के कारण मानव सभ्यता का जन्म स्थल रहा है ।
- राजस्थान मे मानव सभ्यता के प्राचीनाम् साक्ष्य नदी घाटियो में देखने को मिलते है ।

नोटः- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का सर्वप्रथम श्रेय एच.सी.एल. क्लाइल को दिया जाता है ।

राजस्थान मे पूर्व पाषाणकालीन प्रमुख स्थल

निम्न है -

- अजमेर, अलवर, चित्तौड., भीलवाडा, जयपुर, झालावाड, जालौर, जोधपुर, पाली, टोंक आदि ।
- नदीः- चम्बल, बनास, लूणी एवं उनकी सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए ।
  मध्य पाषाण कालः- इस काल के साक्ष्य निम्न स्थानो से प्राप्त हुए है ।
- प्रमुख स्थलः- बागौर-भीलवाडा बेडच (चित्तौड), तिलवाडा-बाडमेर, विराट-जयपुर (विराट नगर)
- नदीः- लूनी एवं सहायक नदी
- उपकरणः-ब्लेड, स्क्रेपर, ट्रायएंगल, क्रेसेन्ट, ट्रेपेज, स्क्रेपर, प्लाइटर आदि ।
- ये उपकरण-जैस्पर, एगेट, चर्ट, कार्नेलिपन, कक्वार्टजाइट, कल्सेडोनी आदी पाषाणों के बने होते थे ।

नोट

निम्न स्थानो से शैलाक्षय चित्र मिले हैः-

- बूंदी- छाजा नदी क्षेत्र, विराटनगर-जयपुर
- कोटा- अरनिया क्षेत्र, हरसौरा-अलवर
- सोहनपुरा-सीकर, दर - भरतपुर

उत्तर (नव) पाषाण कालः- भारत के अन्य भागों की तरह राजस्थान में भी इस काल के साक्ष्य मिलते है ।

स्थलः- अजमेर, नागौर, सीकर, झुन्झुनू, जयपुर हनुमानगढ (कालीबंगा), उदयपुर (आहड गिलूक), चित्तौड, जोधपुर आदि ।

राजस्थान में धातु कालः- इस काल को तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

ताम्र पाषाण	लौह काल	चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति **(PGW)**
तम एवं ताम्र-कांस्य काल (केवल ताम्र पाषाण या कास्य उपकरण मिले) स्थल-गणेश्वर (सीकर) कालीबंगा (हनुमानगढ) गिलूण्ड (राजसमन्द) आहड व झाडौल (उदयपुर) पिण्ड पाडलियाँ (चित्तौड) कुराडा (नागौर)। सावनियाँ व पुगल (बीकानेर) नन्दलालपुरा, किराउत, चीथवाडी (जयपुर) कौल माहौली (सवाई माधोपुर) बुढापुष्कर (अजमेर) मलाह (भरतपुर)	लौहे का आविष्कार स्थलः- नोह (भरतपुर) जोधपुर (जयपुर) नगर सुनारी (झुझुनू) भीनमाल रैढ (टोंक) सांभर (जयपुर) नोटः- नोह से प्राप्त लौह अवशेष भारत मे लौहयुग आरम्भ होने की सीमा रेखा निर्धारित करने के महत्वपूर्ण स्त्रोत है। चक 84, तखानवाला गंगानगर, अनुपगढ (बीकानेर)	सलेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति का उदय । स्थलः- विराट नगर व जोधपुर (जयपुर) सुनारी नोह

राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ

बागौर

अवस्थिति – भीलवाडा (राजस्थान)
नदी – कोठारी (महासतियाँ का टीला नामक जगह पर ।)
उत्खनखनकर्ता – डॉ. वी. एन. मिश्र (1967–70) द्वारा डेक्कन कॉलेज पूना के सहयोग से एवं लैश्विक महोदय

सामग्रीः– प्रागैतिहासिक काल के साक्ष्य मिले है ।

- 4000 ईसा पूर्व - 5000 ईसा पूर्व पुरानी सभ्यता है ।
- यह सभ्यता तीन स्तर की है ।
  1. प्रथम स्तर– 4180-3285 ईसा पूर्व
  2. दूसरा स्तर– 2750 ईसा पूर्व -500 ईसा पूर्व
  3. तीसरा स्तर– 500 ईसा पूर्व – वर्तमान तक
- बडी संख्या मे लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए है ।
- शिकार/आखेट द्वारा जीवन निर्वाह के साक्ष्य मिलते है ।
- यहां से तांबे के उपकरण भी मिलते है, जिसमें प्रमुख उपकरण छेद वाली सुई है ।
- यहां से कृषि एवं पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है ।
- यहां तीसरे स्तर की खुदाई मे लौह उपकरणों के साथ चाक पर बने बर्तन एवं मृदभाण्डों के साक्ष्य मिले है ।
- यहां मकान बाने के लिए पत्थर के साथ ईंटों का प्रयोग किया गया है ।
- बागौर के निवासी शवों को उत्तर दक्षिण दिशा मे दफनाते थे ।
- बागौर सभ्यता में शव को दफनाने की दिशा भिन्न थी । जैसे–
  1. प्रथम स्तर–पश्चिम–पूर्व (निवास पर ही)
  2. द्वितीय स्तर–पूर्व–पश्चिम (निवास पर, बर्तन व खाद्य पदार्थ व उपकरण के साथ)
- तीसरा स्तर–उत्तर–दक्षिण (निवास पे ही)
- बागौर को ''मध्य पाषाण काल सभ्यता का घर'' कहा जाता है ।
- बागौर सभ्यता स्थल को ''आदिम सभ्यता/संस्कृति का संग्रहालय'' कहा गया है ।

तिलवाडा

अवस्थितिः–बाडमेर
नदी– लूणी नदी
उत्खननन कर्ता – एन. मिश्रा, पूना विजय कुमार राजस्थान राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय तथा एल.सी. लैसनिक (हिडनबर्ग विश्वविद्यालय) के नेतृत्व में किया गया ।

सामग्री

- यहां से 5 आवास स्थलों के साक्ष्य मिले है ।
- यह सभ्यता भी बागौर सभ्यता के समकालीन थी, अतः यहां से भी पशुपालन के साक्ष्य मिलते है ।
- यहां से एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव एवं पशुओं के अस्थि अवशेष मिले है ।
- यहाँ पर चॉक से बनी स्लेटी व लाल रंग के मृदभाण्ड, सिलबट्टा जली हुई हड्डियाँ, बर्तनों व सुक्ष्म उपकणों के अवषेश मिले है।
- वी.एन. मिश्र ने इस सभ्यता का काल 500 ईसा पूर्व – 200 ईसा पूर्व माना है ।
- पाषाणकालीन सभ्यता के अन्य स्थल निम्न है । जायल, डीडवाना (नागौर) बुढा पुष्कर (अजमेर) ।

कालीबंगा

अवस्थिति– हनुमानगढ
नदी–घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग
उत्खननकर्ता– अमलानन्द घोष(1952) अन्य सहयोगी–बी. बी. लाल बी. के. थापर, जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
शाब्दिक अर्थ– काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम– दीन हीन बस्ती– कच्ची ईंटों के मकान ।

सामग्री

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो धन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों । सडकें समकोण काटती है ।
- मकान कच्ची ईंटों के थे बल्लियो की छत होती थी । ऑक्सीपोर्ट पद्धति/जाल पद्धति पर मकान बने है ।
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईंटों को धूप से पकाया जाता था ।

- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
- यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है ।
- यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है ।
- यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है ।
- यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।
- यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
- इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
- यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है ।
- अन्य सामग्रीः- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदिः
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों व मुहरों पर जो लिपी पाई गई। वो सिंधु लिपी के समान ही थी जिसे दायें से बायें लिखा जाता था।
- 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है ।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन पर आधारित राजस्थान का आधुनिक नगर-जयपुर है ।

नोटः- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

सोथी

अवस्थिति- बीकानेर, हनुमानगढ 1953
उपनाम- कालीबंगा प्रथम भी कहा जाता है ।
ए. एन. घोष ने इसे सम्पूर्ण हडप्पा सभ्यता का उद्गम स्थल कहा है ।

नोटः- हडप्पा सभ्यता के अन्य स्थल- पुंगल एवं सोबनिया है ।

आहड

अवस्थिति - उदयपुर
नदी - आहड (आयड) या बेडच के किनारे
उपनामः- ताम्रवती नगरी (ताम्र उपकरणों के कारण)
बनासनीयन सभ्यता (बनास की सहायक नदियों पर स्थित)
धूलकोट-(स्थानीय नाम मिट्टी का टीला)
मृतकों का टीला-(मृतप्राय सभ्यता के कारण)
आघाटपुर-(प्राचीन नाम) आघाट दुर्ग
उत्खनकर्ताः- अक्षयकीर्ति व्यास सर्वप्रथम 1953 ई. में ।
सहयोगीः- रतनचन्द्र अग्रवाल, उत्खनन - 1954
एच.डी. सांक लिया, वी. एन. मिश्र, उत्खनन 1961-62

सामग्री

- यहां से 4000 ईसा पूर्व प्राचीन प्रस्तर युगीन सभ्यता के अवशेष मिले है ।
- इस सभ्यता का दूसरा नाम ताम्रवती नगरी भी मिलता है जो यहाँ ताँबे के औजारों व उपकरणों के अत्यधिक प्रयोग का सूचक है।
- यह 8 स्तर की सभ्यता है, जिसके चौथे स्तर से ताँबें की दो कुल्हाडियाँ मिली है ।
- यहाँ से एक घर मे 6-8 चूल्हे मिले है, सम्भवतः सामुहिक भोज अथवा संयुक्त परिवार का प्रचलन रहा होगा ।
- यहाँ से एक युनानी मुद्रा मिली है जिस पर अपोलो (सूर्य का देवता) का अंकन है ।
- बिना हत्थे के जलपात्र मिले है जो फारस (ईरान) से सम्बन्ध को दर्शाते है ।
- यहाँ के लोग पत्थरो की नीव एवं ईटों की दीवार बनाते थे, मकान पर छत बाँस का होता था ।
- ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
- नालियों के अवशेष भी मिलते है ।
- यहां से काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड मिले है ।
- इन मृदभाण्डों मे लोग अनाज रखते थे जिन्हे स्थानीय भाषा में गोरे या कोठ कहा जाता है ।
- पशुपालन यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था ।
- तौल के बाट व माप मिलना यहाँ वाणिज्य-व्यापार की उन्नति का संकेत करता है ।
- रंगाई-छपाई के व्यवसाय से परिचित थे ।
- यहां से एक बैल की मृण्मूर्ति मिली है जिसे ''बनासीयन बुल'' की संज्ञा दी गयी है ।
- यहां के लोग आभूषणों सहित शवों को दफनाते थे संभवतः मृत्यु के बाद भी जीवन मे विश्वास रखते थे ।
- आहड से ताँबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुई है ।
- यहां उत्खनन मे ठपे प्राप्त होने से रंगाई छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान लगाया जाता है ।

- उत्खनन में मिट्टी एवं पत्थर के मनके, आभूषणों तथा पशु-पक्षी आकृतियुक्त मिट्टी के खिलौने भी प्राप्त हुए हैं।
- अन्य सामग्री मे ताँबे की 6 मुद्राए, ताँबे की कुल्हाडियाँ अंगूठियाँ, चुडियाँ पत्थर के मनके, चट्टूरे इत्यादि प्राप्त हुए है ।

रंग महल

अवस्थितिः- हनुमानगढ
नदीः-घग्घर स्स्वती/चौताग/दृषद्वती
उत्खननः- श्रीमति हन्नारिड
(स्वीडिश)-1952-54
रंगमहलः-लाल रंग के पात्रों पर काले रंग की डिजायन की गई है अतः नाम रंगमहल पडा ।
इनका मुख्य भोजन चावल था ।

सामग्री

- यहाँ घण्टाकार मृदपात्र, टोटीदार घडे, कटोरे, बर्तनों के ढक्कन, दीपदान एवं बच्चो की खिलौनों की पहियेदार गाडियाँ इत्यादि मिली हैं ।
- यह स्थल कुषाणकालीन सभ्यता के समकालीन है । क्योंकि यहां से कुषाणकालीन सिक्के एवं मिट्टी की मुहरे मिली हैं ।
- मृण्यमूर्तियों पर गांधार शैली की छाप ।

बालाथल

अवस्थिति - वल्लभनगर उदयपुर)
नदी - आयड/बेउच के किनारे
उत्खननकर्ता - वी.एन.
मिश्र (1994-2000)
अन्य सहयोगी - वी. एस सिंह, आर. के. मोहनत देव

सामग्री

- यह एक ताम्रपाषाणिक सभ्यता है
- यहां के लोग मिट्टी के बर्तन एवं कपडा बुनना जानते थे ।
- यहां से एक दुर्गनुमा भवन एवं 11 कमरों वाला विशाल भवन भी मिला है ।
- यहां से मिट्टी का बना साँड की आकृति मिली है । यहां एक नलकूप एवं 5 लोहा गलाने की भट्टियों के साक्ष्य भी मिलते है ।
- उत्खनन से प्राप्त मृदभाण्डों, ताँबे के औजारों और मकानों पर सिंधु घाटी सभ्यता के समान हैं जिससे दोनों सभ्यता का सम्पर्क होने का पता चलता है।
- बुना हुआ वस्त्र मिला है ।

गिलूण्ड

अवस्थितिः- राजसमन्द
नदीः- बनास उत्खननकर्ताः-बी.बी. लाल (1957-58)
अन्य सह उत्खननकर्ताः- बी. एस., शिन्दे पूना, ग्रेगरी, फेशल, अमेरिका 1998-2008
उपनामः-बनास संस्कृति

सामग्री

- ताम्रयुगीन सभ्यता है, जिसका समय 1900BC-1700BC निर्धारित किया गया है ।
- यहां से पांच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले है । (1) सादे (2) काले (3) पालिशदार (4) भूरे (5) लाल एवं काल
- उत्खनन में मिट्टी के खिलौने (हाथी, ऊँट, कुत्ते की आकृति) पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दाँत की चूड़ियों के अवशेष मिले है।

ओझनिया

अवस्थिति - भीलवाडा
उत्खनन -भारतीय सर्वेक्षण विभाग (2000 ई.)

सामग्री

- यहां की भवन संरचना के आधार पर तीन स्तर की सभ्यता की जानकारी मिलती है ।
- सभी स्तरों पर काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड सफेद रंग से चिन्हित हैं तथा बनाने की विधि भी अलग है ।
- गाय एवं बैल की मृण्मूर्तियाँ, ताँबे की चुडियाँ, खिलौना, शंख, गाडी के पहिये, प्रस्तर हथौडा एवं कार्नेलियन फियास मिला है ।

गणेश्वर

अवस्थिति - नीम का थाना (सीकर) नदी- कॉतली
उत्खननकर्ता - R.C. अग्रवाल 1977

सामग्री

- यहां से 2800BC पूर्व की ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते है ।
- इतनी प्राचीन ताम्रयुगीन सभ्यता भारत मे दूसरी नही है अतः इसे ''ताम्रयुगीन सभ्यताओ की जननी'' कहा जाता है ।
- यहां से प्राप्त ताम्र उपकरणों मे 99 प्रतिशत तांबा है ।
- मकानों के लिए पत्थर का प्रयोग किया जाता था।

- बस्ती को बाढ से बचाने के लिए पत्थर के बांध बनाये गये ।
- भारत में पहली बार ताम्र उपकरण एक साथ यही प्राप्त हुए हैं ।
- यहां मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन्हे कपीषवर्णी मृदपात्र कहा जाता है ।
- यह बर्तन काले एवं नीले रंग से सजाएं हुए हैं ।
- यहां से ताँबा का निर्यात हडप्पा सभ्यता व मोहनजोदडों को किया जाता था ।
- यहां से कुल्हाडी, तीर, भाले, सुईयाँ चुडियाँ एवं मछली पकडने का कांटा भी प्राप्त हुआ है ।

बैराठ

अवस्थिति–जयपुर
नदी– बाण गंगा/ताला नदी
उत्खननकर्ता–दयाराम साहनी(1936–37)
अन्य उत्खननकर्ताः–कैलाशनाथ दीक्षित एवं नीलरत्न बनर्जी
यह एक लौह युगीन सभ्यता है ।

अन्य विशेषताएँ एवं सामग्री

- बैराठ प्राचीन मत्स्य जनपद की राजधानी थी ।
- यहां बीजक की पहाडी, भीमजी की पहाडी (मोतीडुंगरी), महादेव जी की पहाडी उल्लेखनीय है, जहां से पुरातात्विक सामग्री प्राप्त होती है ।
- महाभारत काल मे पाडवों ने यहां अज्ञातवास काटा था ।
- यहां पर मौर्यकाल एवं बाद के काल के अवशेष मिलते है ।
- एक भांड में सूती वस्त्र से बंधी कुल 36 मुद्राएं मिली है, जिसमे से चाँदी की 8 मुद्राएं पंचमार्क (आहत) मुद्राए है । शेष 28 मुद्रांए इण्डो ग्रीक शासको की है ।
- बैराठ के उत्खनन से मिट्टी के बने पूजा पात्र, थालियाँ, मटके, कुंडिया, घडे प्राप्त हुए किन्तु लोहे व ताँबे की कलाकृति नही मिली ।
- 1999 मे उत्खनन मे यहां मौर्यकालीन गोल बौद्ध मन्दिर मठ, स्तूप के साक्ष्य मिले है जो हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित है ।
- यह भारत मे मन्दिर के प्राचीनतम अवशेष माने जा सकते है ।
- 1837 मे कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाडी से दो शिलालेख खोज निकाले ।
- यह शिलालेख अशोक के है तथा बाह्मी लिपि मे लिखे गए है इन्हे भाब्रू अभिलेख अथवा कलकता बैराठ अभिलेख के नाम से भी जाना जाता है ।
- इन अभिलेखों मे अशोक बौद्ध धर्म ग्रहण करने की जानकारी मिलती है ।
- बैराठ से एक स्वर्ण मंजूषा मिली है जिसमे संभवत बुद्ध के अस्थि अवशेष रहे होगें ।
- चीनी यात्री हैनसांग भी बैराठ आया था उसने यहां 8 बौद्ध मठो का जिक्र किया है ।
- हुण आक्रान्ता मिहिरकुल ने बैराठ का विध्वंस कर दिया था ।
  नोटः– जयपुर शासक रामसिंह ने भी यहां उत्खनन करवाया था उस समय बैराठ का किलेदार किरतसिंह खंगारोत था ।
- भीमसेन की डुंगरी पर एक गड्ढा है जिसमे पानी भरा रहता है । उसे भीमतला (भीमतालाब)भी कहा जाता है ।
  बैराठ से शंख लिपि एवं शैलाश्रय चित्र भी मिले है ।

ईसवाल

उदयपुर
उत्खननन– राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

विशेषताएँ

- यह 5 स्तरों की सभ्यता है ।
- मकान पत्थरों के द्वारा निर्मित है जिन्हे मिट्टी के गारे से जोडा गया है ।
- यहां से 2000 वर्ष तक निरन्तर लोहा गलाने के साक्ष्य मिले है ।
- मौर्यकाल, शुंगकाल एवं कुषाण काल मे लोहा गलाने की गतिविधियां संचालित होती है ।

यह एक प्राक ऐतिहासिक सभ्यता है तथा यहां से प्राप्त सिक्कों को प्रारम्भिक कुषाणकालीन माना जाता है ।

नगर (टोंक) – प्राचीन नाम – मालव नगर/करकोटा नगर

- यहां पर 6000 मालव सिक्के प्राप्त हुए । एवं 1000 अन्य पात्रों के टुकडे मिले ।
- यहां पर लाला रंग के मृदपात्र मिले ।
- यहां के पात्रों पर मानव एवं पशुओं की आकृतियां मिली है ।
- यहां पर गुप्तोतर कालीन स्लेटी पत्थर से बनी महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा, पत्थर पर मोदक गणेश का अंकन एवं तीन फणधारी नागों का अंकन एवं कमल धारण किए हुए लक्ष्मी आदि उल्लेखनीय है ।
- इसे खेडा सभ्यता भी कहते है ।